(1)

BA-II (H)
मैथिली
पेपर - छह

प्रो० संजीत कुमार राम
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

— चन्द्र रचनावली

गंगा स्तुति मे गीतक भावना

गंगा स्तुति रचनाकार अभिनव कवि महाकवि विद्यापति छथि। गंगा स्तुति विद्यापतिक दोसर गीत अछि। एहिमे गंगा नदीक विनती अछि, मिथिला अथवा सम्पूर्ण भारतमे महत्वपूर्ण प्राकृतिक उपादानमे दैवी-शक्ति कल्पना क' आओर आराधना करबाक सन्दर्भ अछि। विद्यापति जीवनक अन्तिम कालमे गंगाक छहर मे (किनारा पर) गंगाक स्तुति करैत छथि। यथा-

"बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे। छाड़इते निकट नयन बह नीरे।
कर जोड़ि बिनमओ बिमल तरङ्गे। पुन दरसन होअ पुनमति गङ्गे।"

कवि कहैत छथि जे अहाँक तीर अर्थात

कहैत छै जे आइयो हमरा अद्भुत सुखद आनन्द आबि रहल अछि। आइयो मिथिला छोड़ैत हमरा पीड़ा भ रहल अछि। बचपनसँ ओर अहि रहल अछि। गंगाक दर्शन तरंग के विद्यापति हाथ जोड़ि प्रणाम करैत छथि आओर बेर-बेर दर्शनक अभिलाषा व्यक्त करैत छथि। एहि पुण्यमयी गंगा कें पुनः दर्शन करबा चाहैत छथि।

विद्यापतिक गीतक पद थिक –

"एक अपराध छेमब मोर जानी परसल
माय पाय तुअ पानी।
कि करब जप-तप जोग धेआने जनम
सुफल भेल एकहि सनाने।"

कवि कहैत छथि जे हम पानि-छुबिकऽ एकटा अपराध करऽ जा रहल छथि ओ अपराधकेँ क्षमा करबाक हेतु गंगासँ विनती कऽ रहल छथि। ओ अपराध थिक कवि द्वारा गंगा मे पैरक (पएर) । किया रखैत

स्नान करबाक कs सकैत अछि जखन कि लोकक पैर सभसँ पहिने पानिमे जैत। एहि अपराधकेँ क्षमा करबाक बात विद्यापति कs रहल छथि। कहैत छथि जे एकहि स्नान सँ जनम सफल भs गेल। आब जप-तप-योग आ ध्यानक प्रयोजन नहि। जे जप-तप-योग मे निमग्न छथि ओहि लोकनि गंगा स्नान कs आबथि हुनक जनम सफल भs जयतनि।

= समाप्त =

२मा०४